International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 05-12-2020; Accepted: 20-12-2020; Published: 06-01-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 01-02

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. पूनम मदान[1], कल्पना गुप्ता[2]
[1] प्रधानाचार्या, डॉ. वीरेन्द्र स्वरूप इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज़, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्रा, हिमालयन विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम उन योजना निर्माताओं के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे जो सामाजिक समस्याओं से लडने के लिए नई–नई योजनाएं निर्मित करते है। आधुनिकीकरण का समाज के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभावों को पूर्णतया समझने के पश्चात ही केन्द्र एवं राज्य सरकारें नवीन एवं बेहतर योजनाओं को क्रियान्वित करने में सक्षम हो पायेगी। प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम प्रशासकों के लिए नए–नए नियम व कानून बनाने तथा उसे नवीन परिस्थिति में लागू करने में मददगार साबित होंगे।

मूलशब्दः क्रियान्वितए आधुनिकीकरणए पराकाष्ठाए नए–नए नियम

प्रस्तावना
20वीं सदी के आरम्भ से भारतीय जीवन शैली तथा सामाजिक संस्थाओं में जब पश्चिमी समाज की विशेषताओं का समावेश होना आरम्भ हुआ, तब से यहाँ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ी। दरअसल परम्परागत समाजों में होने वाले परिवर्तनों या औद्यागीकरण के कारण समाजों में आये परिवर्तनों को समझने तथा दोनों में भिन्नता प्रकट करने के लिए विद्वानों ने आधुनिकीकरण की अवधारणा को जन्म दिया। एक ओर उन्होंने परम्परागत समाज को रखा और दूसरी ओर आधुनिक समाज को। इस प्रकार उन्होंने परम्परा बनाम आधुनिकता को आधार बनाया। इसके साथ ही जब पाश्चात्य विद्वान, उपनिवेशों एवं विकाशील देशों में होनें वाले परिवर्तनों की चर्चा करते है तो वे आधुनिकीकरण की अवधारणा का सहारा लेते है।
आज के युग की विशेषता है कि विश्व का कोई देश ऐसा नहीं है जो अपने आपको आधुनिक न बनाना चाहता हो। अब परम्परा का पालन करने वाले लोगों को पिछड़े हुये लोगों में गिना जाता है, प्रगतिशील नहीं कहा जाता। जनता जिस समाज में रहती है उसे अधिक से अधिक आधुनिक बनाने की दिशा तलाशती है।
ए.आर. देसाई आधुनिकीकरण को केवल समाजिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रखते बल्कि जीवन के सभी पहलुओं तक विस्तृत मानते है

उद्देश्य
अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है:
1. आधुनिकीकरण के प्रति स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आधुनिकीकरण के प्रति विभिन्न वर्गो के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. आधुनिकीकरण के प्रति शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

महत्व
वर्तमान भारतीय समाजिक परिदृश्य में आधुनिकीकरण की जो प्रक्रिया चल रही है, उसके फलस्वरुप समाज एवं संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में लगातार परिवर्तन हो रहे है। इन सांस्कृतिक तत्वों में हो रहे परिवर्तनों को समझने व जानने के लिए इसका अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
वर्तमान युग विज्ञान की पराकाष्ठा का युग है, धर्म को विज्ञान की कसौटी पर कसा जा रहा है। धार्मिक मान्यताएं वैज्ञानिक तथ्यों के सामने क्षीण हो रही है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य हो या धार्मिक परिप्रेक्ष्य, सभी में वैज्ञानिक विचारों का समावेश होता जा रहा है, और इसके कारण सामाजिक एवं धार्मिक मान्यतायें बहुत तीव्र गति से बदल रही है।

सुझाव
समयाभाव परिस्थिति के कारण इस अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा कुछ वर्ग व तथ्य छूट गये है। अतः भावी अनुसंधानकर्ताओं को निम्न सुझाव दिये जा रहे है–
शोधकर्ताओं द्वारा आधुनिकीकरण के उपक्षेत्रों (सामाजिक–धार्मिक, विवाह, स्त्री की स्थिति की शिक्षा) के प्रति विवाहित एवं अविवाहित परास्नातक विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन भी किया जा सकता है।
1. इस अध्ययन को केवल देहरादून शहर के स्नातक विद्यार्थियों पर किया गया है, जबकि इसी प्रकार का अध्ययन अन्य प्रदेश, अन्य शहर एवं क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।
2. यह अध्ययन स्नातक विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य विषयों में पढ़ने वाले स्नातक और परास्नातक विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
3. आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति को दूसरे अन्य चरों के साथ मिलाकर भी अध्ययन किया जा सकता ळें

संदर्भ
1. अंगिरा, के0के0, ए स्टडी ऑफ वैल्यूज इन रिलेशन टु लोकेलिटी एण्ड जेण्डर, इण्डियन साइक्लाजिकल रिव्यू, 44, 1995, 10.14
2. आर्मर, एस तथा आर यूटज, फार्मल एजूकेशन एण्ड इन्डिविजुअल माडर्निटी इन एन अफ्रीका सोसाइटी, अमेरिकन जर्नल आफ सोशियोलाजी, जनवरी 1971, 604–626
3. Srinivas MN. Social Change in Modern India, California Press, Los Angles, 1966, 50.
4. Srinivas MN, Ibid, 52.

5. Weiner Myron. Modernization: the dynamics of growth, Higgers bothoms Ltd.
6. M Anastasi A. Psychological testing (6th Ed.) New York: Mac Millan, 1988.
7. Buch MB. Ed, Fourth Survey of Research in Education, New Delhi, NCERT, 1991.